साभार: फ्लॉर्ड हैमेन एवं नोरमा जॉनसन

औपनिवेशिक अमेरिका में दक्षिण एशियाई

शुरुआत से ही उन्हें आज़ादी की तलाश थी और इसके लिए प्रयासरत थे

फ्रांसिस सी. असीसी

बहुत संभव है कि दक्षिण एशियाई पहली बार वर्जिनिया में यूरोप से आकर बस्तियां बसाने वालों की पहली पीढ़ी के दौरान लाए गए हों यानी 17वीं सदी के तीसरे दशक में ही।

इस साल जब अमेरिका अपनी 400वीं वर्षगांठ मना रहा है, उसके निवासियों में उन दक्षिण एशियाइयों की संतति भी शामिल है जो 375 साल पहले औपनिवेशिक वर्जिनिया के अदालती दस्तावेजों में ''ईस्ट इंडियन्स'' या ''एशियैटिक इंडियन्स'' के रूप में दर्ज हैं। तेज़ी से बदलते, विभिन्न जातीय समूहों को समरस बनाते अमेरिका में उन्हें ''मुलैटो,'' ''नीग्रो'' और ''कलर्ड'' की श्रेणियों में रखा गया। बीतती पीढ़ियों के साथ-साथ वे अपनी जातीय पहचान खोते गए और अफ्रीकी-अमेरिकी समुदाय में घुलमिल गए। धीरे-धीरे एशिया से सम्बन्ध भूली-बिसरी बात बन गया।

लेकिन इतिहासविदों, समाजशास्त्रियों और इस जनसमूह द्वारा खुद दो दशकों की गहरी छानबीन से न केवल अमेरिका के शुरुआती दौर में उनकी उपस्थिति के बारे में पता चलता है बल्कि अपने जीवन में उस मूल्य को उतारने की उनकी प्रबल भावना के भी साक्ष्य सामने आए हैं जो आगे जाकर इस नए देश की लोकाकांक्षा बनने वाला था- निजी स्वतंत्रता के लिए निरंतर प्रयास। शोध से पता चलता है कि दक्षिण एशियाई यहां डच, फ्रांसीसियों, अंग्रेजों और बाद में अमेरिकी व्यापारिक जहाज़ों द्वारा बंधुआ नौकरों या दासों के रूप में लाए गए। लेकिन पूर्वी समुद्रतटीय क्षेत्र के अदालती दस्तावेज़ों से पता चलता है कि यह लाए गए ''ईस्ट इंडियन्स'' जल्द ही अपने ''मालिकों'' से स्वतंत्र होने के लिए मुकदमे लड़ने लगे या फिर भाग निकले।

इस बात के काफी प्रमाण मिले हैं कि यूरोपीय व्यापारिक पोत भारतीय बन्दरगाहों से नाविकों को भर्ती करते थे जो यूरोप पहुंचकर उन एजेंटों की बातों में आ जाते थे जो अमेरिका के लिए बंधुआ मज़दूरों की भर्ती और आपूर्ति करते थे। कभी-कभी इंग्लैंड लौट रहे ईस्ट इंडिया कम्पनी के कर्मचारियों के साथ नौकरों के रूप में इंग्लैंड आए लोग भी वहां से अमेरिका में स्थापित हो रहे नए उपनिवेशों में पहुंच जाते थे। हमें उनके वास्तविक नाम या दक्षिण एशिया में उनके गांव-देस का पता कभी नहीं चल पाएगा लेकिन काफी सम्भावना है कि वे बंगाल, मद्रास, पांडिचेरी, मलाबार, मुम्बई, गोवा और यहां तक कि मॉरिशस, मैडागास्कर और दक्षिण अफ्रीका से आए थे जहां पोत जाया करते थे।

उस दौर के अमेरिका में दक्षिण एशियाइयों की उपस्थिति के अधिकांश प्रमाण भागे हुए दासों को पकड़ने पर इनाम के अखबारी विज्ञापनों में दिखते हैं।

13 जुलाई 1776 के वर्जिनिया गज़ट में विज्ञापन छपा- ''नौकर, नाम जॉन न्यूटन, करीब बीस साल की उम्र, पांच फुट पांच या छह इंच लम्बा, दुबला-पतला, जन्म से एशियाई भारतीय, बारह महीने से वर्जिनिया में रह रहा था लेकिन (जैसा कि वह कहता है) दस साल इंग्लैंड में सर चार्ल्स ह्विटवर्थ की सेवा में रहा है। लम्बे काले, कुछ घुंघराले बाल जिन्हें पीछे को बांधकर रखता है। वह विलियम्सबर्ग के रास्ते पर किंग विलियम कोर्टहाउस और टॉड्स ब्रिज के बीच अपने मालिक को छोड़कर भाग गया है। विज्ञापन आगे बताता है, ''वह बढ़िया नाई है और सम्भव है कि आज़ाद होकर यही पेशा अपनाए। जो भी इस नौकर को गिरफ्तार करके मुझे खबर देगा उसे आठ डॉलर इनाम में दिए जाएंगे। और अगर मुझ तक पहुंचाया गया तो वाजिब खर्चा अलग से- विलियम ब्राउन।'' लगता है न्यूटन लापता होने में सफल रहा क्योंकि छह दिन बाद छपे दूसरे विज्ञापन में विलियम ने इनाम की रकम दस डॉलर कर दी थी।

यूनिवर्सिटी ऑफ़ वर्जिनिया के वाइज़ स्थित कॉलेज के इतिहास के प्रोफ़ेसर टॉमस कोस्टा ने वर्जिनिया सेंटर फॉर डिजिटल हिस्ट्री एंड इलेक्ट्रॉनिक टेक्स्ट सेंटर के लिए ऐसी कई घटनाओं का संग्रह तैयार किया है।

http://etext.lib.virginia.edu/subjects/runaways/allrecords.html

औपनिवेशिक अमेरिका में प्रवास की प्रारम्भिक लहर के पीछे हैडराइट प्रणाली काम कर रही थी जिसमें एक मजदूर या नौकर को उपनिवेश में लाने पर हर अंग्रेज व्यक्ति को 20 हैक्टेयर जमीन मिलती थी।

2006 में कॉलोनियल विलियम्सबर्ग फाउंडेशन के लेज़्ली मैक्फैडेन, फिलिप लेवी, डेविड मुराका और जेनिफर जोन्स द्वारा तैयार की गई एक पुरातात्विक रपट में बताया गया है कि जॉर्ज मेनेफ़ी एक सम्पन्न अंग्रेज व्यापारी था जिसे जेम्सटाउन के पास विलियम्सबर्ग में 485 हैक्टेयर जमीन मिली थी। वह 1622 में वर्जिनिया आया था और उसने 24

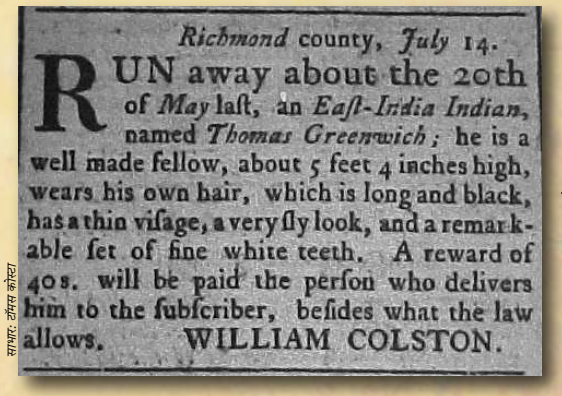

Richmond county, *July* 14.

RUN away about the 20th of *May* laſt, an *Eaſt-India Indian*, named *Thomas Greenwich*; he is a well made fellow, about 5 feet 4 inches high, wears his own hair, which is long and black, has a thin viſage, a very ſly look, and a remarkable ſet of fine white teeth. A reward of 40s. will be paid the perſon who delivers him to the ſubſcriber, beſides what the law allows. WILLIAM COLSTON.

साभार: टॉमस कोस्टा

वर्ष 1768 के वर्जिनिया गज़ट का एक विज्ञापन जिसमें अपने मालिक के चंगुल से छूटकर भागे एक दास के बारे में जानकारी देने के लिए कहा गया है।

वर्ष 1935 में पेट्रीफ़र्ड-वीवर परिवार का पुनर्मिलन। वार्षिक पुनर्मिलन की यह परंपरा मार्था वीवर और उनके पति जोसेफ ने शुरू की। वह इंडियाना में वीवर बस्ती बसाने वाले आज़ाद हेनरी वीवर की बेटी थीं। उनके पूर्वज रिचर्ड वीवर ईस्ट इंडियन थे जिनका जन्म 1675 के आसपास हुआ और वह लैंकस्टर काउंटी, वर्जिनिया में रहे।

आप्रवासी बुलवाए थे जिनमें टोनी नाम का एक ईस्ट इंडियन भी शामिल था। यह साक्ष्य बताता है कि यूरोपीय आप्रवासियों के अमेरिका में बसने के एक पीढ़ी बाद ही, 1624 में दक्षिण एशियाई लोग अमेरिका में लाए जाने लगे थे।

20 साल से वर्जिनिया, मेरीलैंड, डेलावेयर, नॉर्थ और साउथ कैरॉलाइना में अश्वेत लोगों की वंशावलियों की पुनर्रचना के लिए प्राथमिक स्रोतों पर शोध कर रहे कॉलेजविल, पेन्सिलवैनिया के अवकाशप्राप्त इंजीनियर, प्रमुख अभिलेख शोधकर्ता और लेखक पॉल हीनेग बताते हैं: भारत के बहुत से लोग इंग्लैंड में रहते थे, वे नौकर बनकर उपनिवेशों में आए। मैंने पाया कि उनमें कई ने अपनी स्वतंत्रता के लिए मैरीलैंड और वर्जिनिया की अदालतों में मुकदमे लड़े। बाद में वह मुक्त अफ्रीकी-अमेरिकी लोगों में घुलमिल गए।

उनके प्रमुख स्रोत उपनिवेशकालीन अदालती आदेश और अदालती कार्रवाई के दस्तावेज़ हैं- इनकी करीब 1000 पोथियां अब माइक्रोफ़िल्म पर हैं। राष्ट्रीय कर सूचियां, वसीयतें, जायदाद के विवरण, 18वीं और 19वीं सदी में स्वतंत्र नीग्रो लोगों से जुड़े दस्तावेज़, विवाह पंजीकरण, औपनिवेशिक चर्च पंजियां, जनसंख्या रेकॉर्ड, अखबार और रिवॉल्यूशनरी युद्ध की पेंशन फाइलें भी महत्वपूर्ण साक्ष्य उपलब्ध करवाती हैं।

अपनी पुस्तक *फ्री अफ्रिकन अमेरिकन्स ऑफ़ नॉर्थ कैरॉलाइना, वर्जिनिया एंड साउथ कैरॉलाइना* में हीनेग ने प्रारम्भिक इंडियन अमेरिकन वंशावलियां प्रस्तुत की हैं। मार्च 2007 में उन्होंने अपनी वेबसाइट पर भारत से लाए गए बंधुआ मजदूरों और दासों के बारे में और भी सूचना उपलब्ध करवाई है:

www.freeafricanamericans. com/East_Indians.htm

औपनिवेशिक दस्तावेज़ों में उन्हें मिले कुछ प्रमाण हैं:

लैंकस्टर काउंटी: विलियम वीवर, जन्म 1686 के करीब, और जैक वीवर, ईस्ट इंडियन्स ने 13 अगस्त 1707 को लैंकस्टर काउंटी अदालत में खुद को स्वतंत्र किए जाने को लेकर टॉमस पिंकर्ड पर मुकदमा दायर किया। अदालत ने उन्हें उनके स्वतंत्र होने के प्रमाण पांच दिन के अंदर पेश करने की मोहलत देते हुए हुक्त दिया कि वह अपने मालिक के पास लौटने की जमानत दिए बिना इस बीच कहीं दूर नहीं जाएं। दोनो पक्षों में से कोई भी 10 मार्च 1707/08 को अगली सुनवाई के लिए नहीं लौटा।

रिचमंड काउंटी: 6 फरवरी 1705/06 जॉन लॉयड, एस्क्वायर के ईस्ट इंडियन नौकर सेम्बो ने आज़ाद किए जाने के लिए मामला दायर किया। स्व. मि. विलियम कॉल्स्टॅन के जीवित उत्तराधिकारी कैम्टेन टॉमस बील के ईस्ट इंडिया इंडियन नौकर मूटा ने आज़ाद किए जाने के लिए मामला दायर किया। ...मूटा को आज़ाद किए जाने का फैसला और आदेश.... सेम्बो को आज़ाद किए जाने का फैसला और आदेश.....।

वेस्टमोरलैंड काउंटी: मार्च 1708, ईस्ट इंडियन नौकर विल जो मि. डैनियल नील का गुलाम कहा जाता है, ने इस अदालत में दरखास्त की है कि 1689 में किसी समय उसे धोखे से उसके देश ईस्टइंडीज़ से पकड़कर इंग्लैंड ले जाया गया और फिर इस मुल्क में लाकर उसके मौजूदा मालिक के पिता स्व.मि.क्रिस्टॉफर नील के हाथों गुलाम के तौर पर बेच दिया गया; और वह क्रिस्टॉफर नील और डैनियल के यहां ईमानदारी से नौकरी करता रहा लेकिन उसके बावजूद बार-बार मांग किए जाने पर भी डैनियल उसे आज़ाद नहीं कर रहा। इस पर डैनियल को जवाब देने के लिए अदालत में बुलवाया गया। दोनों पक्षों ने पूरी बात अदालत को बताई जिस पर विचार करके अदालत इस फैसले पर पहुंची है कि विल को गुलाम के तौर पर नहीं बेचा जाना चाहिए था और वह आज़ाद है।

स्टैफॅर्ड काउंटी: 1675 के करीब जन्मी ईस्ट इंडियन महिला मार्थ गैम्बी 5 जनवरी 1701/02 में इंग्लैंड में रह रही थी जब हेनरी कॉन्यर्ज ने उससे करार किया कि वह वर्जिनिया में उसकी नौकरी इस शर्त पर करेगी कि अगले चार सालों में वह जब भी लौटना चाहेगी, कॉन्यर्ज उसे इंग्लैंड लौटने का किराया देंगे। यह करारनामा 1704 के करीब स्टैफर्ड काउंटी में दर्ज़ हुआ था।

ऐसे दस्तावेज़ इतिहासकारों को भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों और अमेरिका के बीच के सबसे शुरुआती सम्बन्धों के अकाट्य प्रमाण उपलब्ध करवाते हैं।

साभार: बेट्टी वीवर फ्रोड एवं पॉल हीनेग

लांस वीवर (बाएं से दूसरे) मैरियॉन, इंडियाना में 1939 में अपने परिवार के लोगों के मिलन के मौके पर अपने भानजे और भतीजी के साथ। वह लैंकस्टर, वर्जिनिया के ईस्ट इंडियन रिचर्ड वीवर की आठवीं पीढ़ी के हैं।

ये दक्षिण एशियाई पूर्वजों के वंशज एशियाई अमेरिकियों और अफ्रीकी-अमेरिकियों को अपनी इतिहास दृष्टि को नया आयाम देने और अपनी विरासत को पूरी तरह समझने का अवसर देते हैं।

फ्रांसिस सी. असीसी *कोच्चि, केरल में रहते हैं। indolink.com. पर प्रकाशित अमेरिकी गृहयुद्ध में दक्षिण एशियाइयों की भूमिका पर आधारित लेख शृंखला के लिए उन्हें 2006 में साउथ एशियन जर्नलिस्ट्स असोसिएशन का पुरस्कार मिला। वह अमेरिका में दक्षिण एशियाइयों के प्रारम्भिक इतिहास पर एक पुस्तक लिख रहे हैं। शोध सहायिका* ***एलिज़ाबेथ एफ.पोथन*** *ने भी इस लेख में योगदान किया।*

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचारों से हमें अवगत कराएं।
अपनी राय editorspan@state.gov पर भेजें।